



Shyamacharan Lahiri and His wife Kasimoni Debi

श्रीश्री श्यामाचरण लाहड़ी ---काशीमणि देवी

श्यामाचरणरे बबिाहरे दीरूघकाल पर एइ भाडा बाड.तिहे १८७३ खूष्टाब्दे जगन्नाथदबेरे स्नान यात्रार दनि ताँहार जूषेठपुत्र तनिकड.ि लाहड़ी महाशय.रे जन्म हय.। काशीमणि देवी अत्यन्त शान्त, दयावती ० सुगूहर्णि छलिनै । स्वामीर प्रचण्ड अर्थकष्टरे समय.० तनि परिम धरैय सहकारे सबदकि सामलाइया चलतिने। ताँहार सुबबिचेना ० व्यवस्थार गुणे पतरि सामान्य उपार्जन हइते सञ्चय करया। १८७४ खूष्टाब्दे गरुड.शेवररे एकटि बसतवाटि क्रय. करया सखाने बास करतिने लागलिनै। एइखाने १८७५ खूष्टाब्दे रथयात्रार दनि ताँहार कनष्ठ पुत्र दुकड.ि लाहड़ी महाशय.रे जन्म हय.। एइ बाड.तिहे १८७८ खूष्टाब्दे वड. कन्या हरमिति, १८९० खूष्टाब्दे मध्यमा कन्या हरकिामिनी ० १८९३ खूष्टाब्दे कनष्ठा कन्या हरमिहोर्निरी जन्म हय.। श्यामाचरण एइखानेइ समग्र जीबन अतबिाहति करयाछलिनै। काशीमणि देवी कखन० अलसबाबे समय. काटाइतने ना। प्रातःकाले सर्वप्रथम आगत भक्तिुकके स्वहस्ते भक्तिा दतिने। ताँहार बश्वास छलि ये लक्ष्मीछाडार घररे भिारी आसने ना, ताइ काने दनि भिारी आसति बलिम्ब हइले ताँहार दुश्चन्तिार सीमा थाकति ना। स्वामीर अल्प आय. थाकाय. समस्त गृहकार्य्य स्वहस्ते करतिने। अतथि ० आगन्तुक प्राय.इ आसति। तनि स्वहस्ते रन्धन करया, सकलके तृप्त-पूरूबक भोजन कराइतने। तखनकार दनि स्त्रीलोकदरे मध्ये प्रवाद छलि ये सब

সত্রীলোক লখোপড়া শখে তাহারা পরবর্তী জীবনে গণিকা হইয়া জন্মগ্রহণ করে। তাই কাশীমণি দেবী লখোপড়ায় বন্দি ছিলেন। কিন্তু শ্যামাচরণ নজি লখোপড়া পছন্দ করতেন। তাই তিনি গভীর রাত্রে নজি সত্রীকে কছু কছু লখোপড়া শখিাইয়াছিলেন। পরবর্তীকালে দেখা যায়, কাশীমণি দেবী ধর্মগ্রন্থ সমূহ নজিই পাঠ করতেন। এই পুণ্যবতী নারী স্বামীর প্রদর্শিত যোগপথে সাধনা করিয়া দীর্ঘ জীবন লাভ করিয়াছিলেন। তিনি সাধনার এক উচ্চ অবস্থায় পট্টাইতে সক্ষম হইয়াছিলেন। কাশীমণি দেবী প্রায় ৯৪ বৎসর বয়সে ১৩৩৭ সালের ১১ই চৈত্র, ইংরাজী ১৯৩০, সজ্ঞানে কাশীলাভ করেন।

